Techniques of Assessment of Motivation (प्रेरणा के मूल्यांकन / आकलन की तकनीक या प्रविधियाँ) :

मूल्यांकन के माध्यम से व्यक्ति को सही स्थिति से अवगत करा कर उसे और अच्छा करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है

The Motivation Assessment Scale (MAS) is a rating scale that assess functions of problem behaviour in individuals with develepmental dis-abilities through informant responses. An example item on MAS is "Does this behaviour occur when you are taking to other persons in the room?" (Durand & Crimmins, P.

Unlike personality assessments which look at what a person can do. Motivation provides insight into what an individual wants to do and what they need from a role in order to be engaged and Successful.

मनोवैज्ञानिकों ने मानव अभिप्रेरणा के अभिप्रेरकों को मापने के लिए तकनीक एवं प्रविधियों के सहारे इसे मापने का प्रयास किया है। मानव अभिप्रेरकों में विशेष रूप से सामाजिक अभिप्रेरकों को मापने के अधिक प्रयास किया गया। जहाँ तक जैविक अभिप्रेरकों

के सवाल हैं जो इसे सम्पन्न करते हैं। इस कोई प्रविधि (Technique) का प्रयोग नहीं है क्योंकि इसमें व्यक्ति से पूछे बिना जाना जाता है। इसमें मनुष्य एक सामाजिक प्राणी की इच्छाओं एवं सामाजिक आवश्यकताओं आदि का अध्ययन होता। सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति की कोशिश करता है ... के प्रतिभा Assessment करने के लिए विभिन्न Techniques का वर्णन किया गया है जो निम्नांकित है —

1. Projective techniques (प्रक्षेपण प्रविधियाँ):

प्रक्षेपण प्रविधि में व्यक्ति को कुछ अस्पष्ट एवं असंगठित सामग्रियाँ दी जाती हैं और व्यक्ति उसका वर्णन करता है। जिसमें वह अपने सामाजिक आवश्यकता की अभिव्यक्ति अचेतन रूप से करता है। इस विधि को प्रक्षेपण विधि इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति अपनी इच्छा, आवश्यकता एवं आकांक्षाओं का संघर्ष आदि का प्रक्षेपण अस्पष्ट एवं असंगठित सामग्रियों के वर्णन करने के दौरान स्वयं करता है। प्रक्षेपण परीक्षण तो कई हैं परन्तु थिमैटिक एपरसेप्शन टेस्ट (TAT) इसमें प्रमुख है जिसके द्वारा उपलब्धि आवश्यकता की माप की जाती है।

Scanned with CamScanner

इस परीक्षण में कुछ मानक कार्ड होते हैं जिसमें कुछ अस्पष्ट चित्र बने होते हैं और इन चित्रों के आधार पर व्यक्ति को एक कहानी लिखनी होती है जिसका विश्लेषण करने के बाद व्यक्ति के प्रमुख अभिप्रेरकों के बारे में पता चलता है। इस परीक्षण का प्रतिपादन मरे द्वारा किया गया और उनके अनुसार उपलब्धि आवश्यकता, संबंधन आवश्यकता, प्रभुत्व आवश्यकता, स्वतंत्रता आवश्यकता, आक्रामक आवश्यकता आदि का मापन इस परीक्षण द्वारा किया जाता है।

इस विधि का सबसे प्रमुख दोष यह है कि इसका परिणाम अधिक बहुत विश्वसनीय नहीं होता है। इतना ही नहीं, इसमें वस्तुनिष्ठता का भी अभाव पाया जाता है क्योंकि एक ही कहानी का विश्लेषण अलग-अलग विशेषज्ञ अपने-अपने ढंग से करता है। जिसका परिणाम यह होता है कि Projective techniques द्वारा Social Motives का सही-सही मापन नहीं होता है।

2. Questionnaire Method (प्रश्नावली विधि):

सामाजिक अभिप्रेरकों का मापने के लिये पूछताछ व विभिन्न आविष्कारिका (Inventory) विधि का प्रयोग किया जाता है। इस

Scanned with CamScanner

प्रश्नावली में कई सारे प्रश्न होते हैं जो व्यक्ति के विभिन्न सामाजिक अभिप्रेरकों से संबंधित होते हैं। व्यक्ति इन प्रश्नों को पढ़कर उनका उत्तर हाँ, नहीं या सही-गलत में से किसी एक में जो उसके लिए उपयुक्त होता है में उत्तर देता है।

एडवर्ड्स द्वारा तैयार किए गए इस तरह के प्रश्नावली के सहारे 17 भिन्न-भिन्न प्रकार के सामाजिक अभिप्रेरकों का मापन होता है। इस प्रश्नावली का नाम Edwards Personal Preference Schedule है। इस परीक्षण द्वारा उपलब्धि आवश्यकता, संबंधन आवश्यकता, आभार आवश्यकता, प्रदर्शन आवश्यकता आदि का माप प्रमुख रूप से होता है।

इस विधि का सबसे प्रमुख दोष यह है कि प्रश्नों का सामाजिक उत्तर प्रायः दिया जाता है। इस दोष को दूर करने के लिए एडवर्ड्स ने अपने उपयुक्त शेड्यूल में Forced choice के रूप में तैयार किया है। जिससे प्रश्नावली विधि के ऊपर लगाए गए दोष दूर हो जाते हैं।

3. Situational Test (परिस्थितिजन्य परीक्षण) :- सामाजिक अभिप्रेरकों को मापने की इस विधि में व्यक्ति के सामने एक खास परिस्थिति उत्पन्न किया जाता है और उसमें व्यवहार को देख

करना होता है और उसके द्वारा की गई क्रियाओं के आधार पर उसके सामाजिक अभिप्रेरकों का मापन या मूल्यांकन किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी व्यक्ति के संबंधन आवश्यकता का मापन करना है तो सबसे पहले व्यक्ति के सामने विशेष सिचुएशन जैसे वह अपने मित्र का इंतजार किसी एक ऐसे कमरे में बैठकर कर सकता है जहाँ वह अकेला होगा या फिर एक ऐसे कमरे में बैठकर कर सकता है जहाँ पहले से 20 आदमी बैठे हैं जैसी परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। यदि व्यक्ति में संबंधन आवश्यकता अधिक मजबूत होगी, तो व्यक्ति 20 व्यक्तियों वाले कमरे में इंतजार करना पसंद करेगा। इसी तरह से अगर किसी व्यक्ति में आक्रमणशीलता का मापन करना है तो उसे एक विशेष परिस्थिति (जैसे - एक ऐसे लोगों के बीच लाकर जो उस व्यक्ति को अपमानित करें) में रखकर किया जा सकता है। यदि वह व्यक्ति अपने अपमान का बदला दूसरे लोगों के प्रति आक्रमणशीलता दिखलाकर करता है, तो इसका स्पष्ट मतलब यह है कि व्यक्ति में यह अभिप्रेरक तीव्र है।

Situational Test का दोष यह है कि व्यक्ति को जब यह पता चल जाता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है तो ऐसी परिस्थिति में वह अपना स्वाभाविक एवं स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन ला देता है।

4. Analysis of Historical events (ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण) :-

सामाजिक अभिप्रेरकों की माप ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण करके भी किया जाता है। इस विधि के द्वारा समाज के व्यक्तियों की सामूहिक सामाजिक अभिप्रेरक की माप की जाती है। किसी समाज के अधिकतर व्यक्तियों की आवश्यकता उस समाज के समाचार पत्रों एवं घटनाओं द्वारा आसानी से अभिव्यक्त किया जाता है। यदि इन पत्रों में छपे खबरों एवं घटनाओं का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया जाय तो इस निष्कर्ष पर आसानी से पहुँच सकेंगे की अधिकतर लोगों का सामाजिक अभिप्रेरक क्या है? उदाहरण स्वरूप, यदि भारतीय समाचार पत्रों में 70 वर्ष पहले छपी खबरों एवं उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करें तो पायेंगे की उस समय स्त्री शिक्षा की आवश्यकता नहीं के बराबर थी। परन्तु आजकल परिस्थिति ठीक इसके विपरीत है और गत 10 साल की सामाजिक घटनाओं एवं समाचार पत्रों के खबरों का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि स्त्री शिक्षा की आवश्यकता काफी महसूस की जा रही है।

इस तरह से हम देखते हैं कि सामाजिक अभिप्रेरकों के मापन एवं मूल्यांकन की कई तकनीक एवं विधियाँ हैं।

21/05/20
Dr. S. K. Suman
Asst. Professor
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga.

Scanned with CamScanner